International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 66-68

हिन्दी और तेलुगु छन्द क संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन

लक्ष्मी सुजाता

असिस्टेंट प्रोफेसर, न्यू होराइजन कालेज, बंगलौर, भारत।

प्रस्तावना

छन्द भारतीय भषा-परिवार की उतनी ही प्राचीन परम्परा की है जितना कि ज्ञान की शाखायँ हैं। भरत के प्राचीन लिपिबद्ध आलेख वेद है। और उनका ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेदान्गों की अवश्यक्ता है। वे हैं शिक्षा, व्याकरण, ज्योतिष, कल्प,निरुक्त,और छन्द। वेदान्गों मे मुख्यत: सात छन्दों का प्रयोग है। गायत्री, उष्णिक अनुष्टुप, बृहती, पंक्ती,त्रिष्टुप और जगती। उत्तर भरत के वैयाकरिणिकों के अनुसार सर्वप्रथम 'यास्क' ने छन्द की व्युत्पत्ती पर व्याख्या की है। 'छन्दांसि छादनात' अर्थातछन्द भावों को आच्छादित कर उन्हें समिश्टि रूप प्रदान करते हैं। कात्यायन ने लिखा है कि यदक्षर परिमाणां तच्छन्द:। अर्थात जिस शब्द में संख्या या परिणाम में वर्णों की सत्ता निहित हो वह छन्द है। अर्थात प्रत्येक छन्द में वर्णों की संख्या निर्थारित होती है। तेलुगु वैयाकरिणिकों के अनुसार छन्द के व्युत्पत्ति परक अर्थ को जानने के लिए संस्कृत भाषा लक्षण कर्ताओं की पद्धति का अध्ययन करने की आवश्यक्ता है। तेलुगु वैयाकरिणिकों के अनुसार 'छदि संवरणे', संवरण का अर्थ है आवरण करना। हमारे ह्दय में व्युत्पन्न होने वले अनेक वाक्यों का एक विलक्षण निर्माण को प्राप्त करना ही छन्द है।

छन्द शास्त्र का इतिवृत्त

छन्द शास्त्र के संबंध में प्रासंगिक आलेख पुरातन श्रोत सूत्र में उपलब्ध है। वैदिक एवं संस्कृत छन्दों का सबसे पहले पिंगल मुनि ने विचार किया है। उनका ग्रंथ पिंगल सूत्र लोकप्रिय ग्रंथ है। पिंगल के पश्चात जयदेव कृत जयदेव छन्दम में बीजगणतीय चिह्नों का प्रयोग हुआ है। कालिदास के रुतुबोध और कृतरत्नावली में गुरु, लघु, यति, गति आदि के नियमों का आख्यान सुबोध सैली में किया गया है। इसके अलावा वराहमिहिर ने अपनी बृहत्संहिता में एक पूरा अध्याय छन्दों के बारे में लिखा है। हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में छन्द के मुख्यांग गण माने गये हैं। दोनों भाषओं के छन्द में लघु-गुरू विचार भी समान रूप से स्पष्ट है। पद्य या श्लोक अपने अपने नियमानुसार चरणों में विभक्त होता है और वे चरण मुख्यत: गणों पर आधारित है। वे गण अपने अपने स्वरूपोंपो के आधार पर कई प्रकार के होते हैं। ये गण अक्षरों को जोडने से उत्पन्न होते रहते हैं। इन गणों के जुड़ने से एक चरण और सभी चरणों को मिलाकर एक श्लोक बनता है। हर एक गण में आदि मध्य और अन्त का एक क्रम होता है।

गुरु लघु विचार और स्वरुप

हिन्दी में लघु - । और गुरु - ऽ के रूप में निर्णायित है तेलुगु में भी लघु का संकेत। ही है परन्तु गुरु का संकेत अंग्रेज़ी यु की तरह है। दोनों भाषाओं में लघु का १ अंक और गुरू के २ अंक दिए हए हैं। एक एक अक्षर के उच्छारण में लगने वाले समय के आधर पर गुरू लघु निर्धारित किए गए हैं। तेलुगु भाषा में गुरू और लघु का निर्णय विस्तार से वर्णित है। जैसे कि - ह्स्व व्यंजन, ह्स्व व्दित्वाक्षर, ह्स्व संयुक्ताक्षर आदि लघु के अन्तर्गत आते हैं, और दीर्घ व्यंजन, दीर्घ व्दित्वाक्षर, दीर्घ संयुक्ताक्षर आदि गुरू के अन्तर्गत आते हैं। इतना ही नहीं तेलुगु छन्द में व्दित्वाक्षर के पहले का अक्षर और संयुक्ताक्षर के पहले का अक्षर जो ह्स्व या दीर्घ ही क्यों न हो गुरू के अन्तर्गत आते हैं। पूर्ण बिन्दु, विसर्ग, तथा इन प्रत्यय से जुड़े हुए अक्षर भी गुरू माने जाते हैं। तेलुगु व्याकरण के अनुसार गण्स्वभाव और स्वरूप के अनुसार होते हैं।

स्वरूप के अनुसार गण

स्वरूप का अर्थ है अक्षरों के व्दारा लिखे गये गण। ये चार प्रकार के हैं। १. एक अक्षर गण, २. व्दयक्षर गण, ३. त्रयक्षर गण, ४. चतुरक्षर गण - गण निसर्ग और उप गणों के नाम से भी जाने जाते हैं। निसर्ग गण वृत्त में और उप गण जातियों के साथ लिखे जाते हैं।

हिन्दी में छन्द तत्व तथा भेद:- छन्द वह मात्रिक, वार्णिक तथा ध्वनियों का क्रम है जो गति और यति के नियमों से आबद्ध रहता है। इसके मूल्त: दो भेद होते हैं। स्वर-ध्वनि और यति।

स्वर- ध्वनि

छन्दों की पहचान पाय: ध्वनियों से होती है

(क) मात्राओं को गिनकर

(ख) वर्णों और उनके के क्रम को गिनकर।

हिन्दी और तेलुगु दोनों भषाओं में उच्चरण में लगने वाले समय के अनुसार ही गणना होती है। परन्तु तेलुगु में मात्राओं और अक्षरों को मिलाकर अक्षर ही के रूप में गणना करते हैं। जैसे संस्कृत के याज्ञवल्क्य शिक्षा में कहा गया है :- एक मात्रा भवेत ह्स्व: व्दिमात्त्रो दीर्घ उच्यते तिमात्रास्तु प्लुनै ज्ञैय: व्यंजनम त्वर्थ मात्रकम। इन गणनाओं आधार पर हिन्दी छन्दों के दो भेद किए जा सकते हैं- वार्णिक छन्द, मात्रिक छन्द। इन दोनों प्रकार के छन्दों में तीन उप भेद हैं। १.सम २. अर्थ सम ३. विषम।

१. **सम-** जिन छन्दों के चारों पद समान हो वे सम छन्द होते हैं उदाहरण- मात्रिक छन्द में चौपाई और वार्नीक छन्द में शिखारिणी।
२. **अर्थ-सम-** जिन के प्रथम और तृतीय तथा व्दितीय और चतुर्थ चरण समान हो वे अर्थ सम छन्द हैं। उदाहरण-दोहा और और वसन्त सुन्दरी है।
३. **विषम-** जिन छन्दों के चारों पद भिन्न हों, वे विषम छन्द कहलाते है। हिन्दी और तेलुगु दोनों भषाओं में गण का विभाजन "यमाताराजभानसलगा" के अधार पर ही है।

जैसे कि ऊपर कहा गय है तेलुगु मे एक अक्षर व्यक्षर त्र्यक्षर और चतुरक्षर गण होते हैं। एक अक्षर गण में एक ही अक्षर होने पर भी हमें लघु या गुरू के रूप में ही परिगणित करना अनिवार्य है। व्याक्षर गण में दो अक्षर होते हैं। त्लुगु में ये चार प्रकार के होते हैं। एक लघु और एक गुरू हो तो उसे गल कहा जाता है जो हिन्दि में तुक कह्लाता है। दो गुरू तो उसे गग कहते हैं। दो लघु हों तो उसे लल कहते हैं। इन सब गणों को एक क्रम में रखेंगे तो इस प्रकार बनते हैं।

क्रम	गण	लक्षण	नाम	उपनाम
१.	गुरू लघु	ऽ।	गलमु	ह गण
२.	लघु गुरू	।ऽ	लगमु	व गण
३.	गुरू गुरू	ऽऽ	गगमु	गा
४.	लघु लघु	।।	ललमु	ला

त्र्यक्षर गण तीन अक्षरों से बनते हैं। ये आठ प्रकार के हैं। जैसे भ गण, ज गण, न गण, य गण, त गण, म गण, न गण। इसके लिए संस्कृत में एक श्लोक भी है।

आदि मध्यावसानेषौ उरतायांति लाघवम
भजसा गुरवं यांति मनुअतु गुरु लाघवम

यति और प्रास का निर्णय

हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं के छन्द में यति का महत्व है। जो छन्द का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है। यति से अभिप्राय विराम से है। छन्द पढ़ते समय जहाँ ठहराव होता है, उसे विराम अथ्वा यति कहते हैं। छन्द में गति लय का माधुर्य उत्पन्न करने के लिए यति आवस्यक है। इससे अर्थ स्पषट होत है और वाक्य विन्यास का भी ज्ञात होता है। इन तत्त्वों के आधार पर हिन्दी छन्दों के दो भेद किए जा सकते हैं। वार्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। तेलुगु में यति निर्णय हिन्दी से भिन्न है। तेलुगु में पद्य के चरण के प्रथम अक्षर यति कहलात है। तेलुगु में यति के नौ प्रकार हैं। तेलुगु में प्रास का भी बहुत महत्व है। नन्नय्या ने अपने चिन्तामणि ग्रंथ में प्रास के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है कि व्दितीयो वर्ण: प्रास: अर्थात पद्य के चरण में दूसरा अक्षर प्रास है। प्रास के सत्रह प्रकार हैं। स्थूल रूप में तेलुगु यति के दो भेद हैं। वे हैं स्वर यति और व्यंजन यति। स्वर यति के सात प्रकार हैं, और व्यंजन यति के बाईस प्रकार हैं।

संस्कृत के श्लोक को तेलुगु में पद्यमु कहते हैं। "पदनियमम्बु गल यट्टि पद्यस्मिति" अर्थात पद्य पाद नियमों से युक्त है। यह पद्य "वृत्तं जाति:च इति व्दिविधम" अर्थात पद्य वृत्त और जाति का होत है। जिसमें पद्य के प्रथम अक्षर जिसको गुरू या लघु निर्णीत किया जाता है, सभी चरणों में वह अक्षर उसी स्थान में होन चहिये। वृत्त एक गुरू या लघु से शुरू होकर २६ वृत्त तक होते हैं। कुछ कवियों ने ३६ अक्षर वृत्त बताए हैं, जिन्हें हिन्दी में वार्णिक छन्द कहते हैं जो वर्णों पर आधारित हैं। तेलुगु में मात्रिक छन्द को जाति कहते हैं।

इसमें उप गण भी होते हैं। तेलुगु वृत्त के उदाहरण हैं उत्पल माला, चम्पक माला, मत्तेभम, शार्दूलम। जाति के उदाहरण हैं कंदमु, व्दिपदा, मंजरी व्दिपदा, तरुओजा, उत्साहम, अक्करा, रगड़ा। उपजाति केवल तेलुगु में पाई जती है जो संस्क्रुत भषा के प्रभाव से रहित है। इन में प्रास नियम नहीं होते हैं केवल प्रास यति होती है।

तेलुगु में हर छन्द, वृत्त, में ग्ण, यति, प्रास नियम, और अक्षरों का विवरण होत है।

उत्पल माला वृत्त

१. गण - भ- र- न- भ - भ - र - व
२. यति - १० वाँ अक्षर
३. प्रास नियम है
४. अक्षर - २०

श्री शिरिड़ी निवासमइ, चेतमु पूर्ण दयार्द्रवंतमै
वेषमु साधु रूपमइ, विह्वल भक्त जनावलि रक्ष वै

१. गण - भ - र - न - भ - भ - र - व
२. प्रास - ष
३. श्री और चे यति है।
४. अक्षर २० हैं। इसलिए य्ह उत्पल माला व्रुत्त है।

चम्पक माला वृत्त

१. गण - न - ज - भ - ज - ज - ज - र
२. यति - ११ वाँ अक्षर
३. प्रास नियम है
४. अक्षर - २१

ये दोनों वृत्तों में दोहा छन्द की भाँति आर चरण हैं परन्तु चारों चरण चार अलग अलग वाक्यों में एक के नीचे एक लिखे जाते हैं। दोहा छन्द में चौबीस मत्राएँ होती हैं। उत्पल माला और चम्पक माला वृत्तों में मत्राओं और वर्णों को मिलाकर २०, २१ अक्षर होते हैं। तेलुगु छन्द में वर्णों और मात्राओं को मिलाकर ही गिना जाता है फिर वह मात्रिक छन्द ही क्यों न हो।

हिन्दी और तेलुगु के कुछ अन्य छन्दों में सारूप्यता

शार्दूल विक्रीदित

तेलुगु में शार्दूल विक्रीदित कुछ इस प्रकार है

१. गण - म -स -ज -स -त -त -ग
२. यति - १३ वाँ अक्षर
३. प्रास नियम है
४. अक्षर १९ हैं

हिन्दी में भी शार्दूलविक्रीडित के म स ज स त त ग गणों से युक्त है। इस प्रकार इसके भी प्रत्येक वर्ण में १९ अक्षर हैं परन्तु तेलुगु से भिन्न १२ वें और १९ वें वर्ण पर यति होती है। उदाहरण के लिए : -

ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽऽ।ऽऽ।ऽ

यात्रा में व्रज-भूमि की अहह वे हैं विघ्नकारी बड़े = १९ वर्ण

इन्द्र वज्रा

हिन्दी और तेलुगु भषओं में इन्द्र वज्रा में भी काफी साम्य है।

१. तेलुगु के इन्द्र वज्रा छन्द में त - त - ज - ग - ग गण होते हैं
२. यति - ८ वें अक्षर में यति होती है
३. अक्षर ११ हैं
४. ग ग गुरू के रूप में गिने जाते है

हिन्दी में इन्द्र वज्रा छन्द में दो त गण (ऽ।।, ऽ।।) एक ज गण (।ऽ।) और दो गुरुओं (ऽऽ) के योग से बनता है इसके भी प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं ।प्राय: पाँचवे और ११ वें वर्ण पर यति होती है पर छठे और ११ वें वर्ण पर यति वाले छन्द ही प्राप्त होते हैं। एक गौर करनेवली बात यह है कि तेलुगु में र्णु अक्षर को लघु के अन्तर्गत ही गिनते हैं।

हिन्दी इन्द्रवज्रा छन्द कुछ इस प्रकार है

मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ त - त - ज - ग - ग वर्ण
भाता मुझे सो नव-मित्र सा है।

इसी प्रकार हिन्दी का भुजंगप्रयात जो तेलुगु मे भुजंग कहलाता है, मालिनी स्रग्धरा आदि छन्दओं में हिन्दी और तेलुगु भाषओं मे यति भेद में स्वल्प भिन्नता होने पर भी सारूप्यता है।

परन्तु जैसे कि इत:पूर्व कहा गया है उप जाति केवल तेलुगु से सम्बन्धित है। अर्थात संस्कृत भाषा के रहित होने के कारण ये हिन्दी छन्द से पूर्णत: भिन्न हैं। जैसे - आट्वेलदि, तेट्गीति, कन्द पद्यमु, सीस पद्यमु आदि।

आट्वेलदि के लक्षण

गण :- १-३ चरण ३ सूर्य गण + २ इन्द्र गण = ५ गण
२-४ त्रण ५ सूर्य ग्ण (५ + ५ = १० गण १, २ चरण)
(५ + ५ = १० गण ३, ४ चरण)

यति :- हर चरण के चौथे गण का प्रथम अक्षर

प्रास नियम है और व्यंजन या अक्षरों और मत्राओं की परिमिती नहीं है

।।।।।।ऽ।।।।ऽ।।ऽ।।।।।।।ऽ।ऽ।ऽ।

अन्ग अनग राग मतिशयि ल्लुचुनुन्डु तिनग तिनग वेमु तिय्य नुन्डु

यति हर चरण के चौथे गण का प्रथम अक्षर, प्रास नियम नहीं है और व्यंजन या अक्षरों और मात्रओं की परिमिति नहीं है।

तेट गीति लक्षण

गण :- हर चरण में एक सुर्य गण दो इन्द्र गण दो सुर्य गण इस प्रकार पाँच गण होंगे।

यति :- चौथा गण क प्रथमाक्षर। हो सके तो प्रस यति का प्रयोग कर सकते हैं।
प्रास नियम नहीं है।
अक्षर नियमिति नहीं है।
सीस पद्यमु के लक्षण

गण:- ६ इन्द्र गण + २ सुर्य गण कुल ८ गणों के साथ चार चार बदे चरण **;** ४ + ४ गण (४ इन्द्र गण + २ इन्द्र गण + २ सूर्य गण) सीसमू के पूर्ण होने के बाद आत्वेलदि या तेट्गीति पद्य अपने अपने लक्षणों के साथ लिखना अनिवार्य होता है

यति:- ४ + ४ गणों के दो छोटे चरण को मिलाके आठों चरणों में हर चरण में तीसरा अक्षर या व्यंजन यति होगा। इसके बदले प्रास यति का भी प्रयोग कर सकते हैं।
समग्रत: छन्द भावोद्रेक तथा भावों को तीव्रता प्रदान करते हैं और इसके प्रयोग से कविता में संगीत-सा चमत्कार उत्पन्न हो जात है। इसलिए छन्द कविता के अनिवार्य तत्व हैं और इनका काव्य में महत्व्पूर्ण स्थान है।

निषकर्ष

भारतीय भषाओं का मूल संस्कृत है। इसलिए हर भाषा के व्याकरण, छन्द आदि में सारूप्य्ता का परिचय मिलता है । इसीलिए भषा में भिन्न्ता होने पर भी उसी भिन्नता में हमारी एकता फूलों की माला में छुपी हुई नाज़ुक डोरी की भाँति हम सब को जोड़ कर रखती है।

संदर्भ-ग्रंध:

१. भारतीय काव्य शास्त्र-डा.कृष्णदेव शर्मा पृष्ठ १८८
२. भारतीय काव्य शास्त्र - डा. कृष्णदेव शर्मा,पृष्ठ १८९
३. भारतीय काव्य शास्त्र - डा.कृष्णदेव शर्मा,पृष्ठ १९१
४. भारतीय काव्य शास्त्र - डा. कृष्णदेव शर्मा,पृष्ठ १९६
५. भारतीय काव्य शास्त्र - डा. कृष्णदेव शर्मा,पृष्ठ १९७
६. डा. कृष्णदेव शर्मा, पृष्ठ १९८
७. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २१४
८. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ
९. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २२१
१०. तेलुगु व्याकरण्मु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पुष्ठ २२४
११. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २२८
१२. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद पृष्ठ २३३
१३. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २३४
१४. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्ण प्रसाद,पृष्ठ २४०
१५. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २५६
१६. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद, पृष्ठ २९०
१७. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ २९३
१८. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ ३११
१९. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ ३१९
२०. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ ३२५
२१. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ ३२६
२२. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पृष्ठ ३३९
२३. तेलुगु व्याकरणमु - मल्लादि कृष्णा प्रसाद,पष्ठ ३४८,३४९,३५०